Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
3 2019
VOL. 162

Founder's Essay

सौभाग्य एवं दुर्भाग्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं

अगले महिने नया वित्तीय वर्ष शुरू हो रहा है और कंपनियों में हर जगह कर्मियों की अदलाबदली और स्थानांतरण किया जाएगा। कुछ लोगों की पदोन्नति होगी और नए वर्ष में उत्साह के साथ प्रारंभ करेंगे, लेकिन इसका दूसरा पहलू है कि कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो बिलकुल निरुत्साहित हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि उनके काम का उनकी कंपनियों के लिए कोई मोल नहीं है।

हम चीजों को दो भागों में विभाजित कर देते हैं, जिन्हें नापसंद करते हैं और जो हमें खुशी देती हैं। जो हमारी इच्छाओं के अनुरूप नहीं होती हैं, हम दृढ़ता से नकार देते हैं और जो पसंद की है केवल उनका स्वागत करते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि भाग्य और दुर्भाग्य जुड़े हुए हैं - वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

अगर वर्षा होती है, तो अगले दिन धूप रहती है। यदि आकाश में धूप बनी रहती है, तो वर्षा का दिन आयेगा। यदि आप संसार के शीर्ष पर हैं, तो अनिश्चित काल तक बसंत और गर्मियों की गर्मी की गिनती नहीं कर सकते हैं। आप को अनिवार्य रूप से सर्दियों की ठंड में कंपकंपी को झेलना पड़ेगा। लेकिन अगर आप सर्दियों के दिनों में अपनी उर्जा बचाये रखते हैं, तो बसंत - जब आप इस उर्जा को काम में ला सकते हैं- निश्चित रूप से आपके काम आयेगा।

जहाँ पदोन्नति का अवसर है, वहीं पदावनति की भी संभावना है। आप इसे किस रूप में लेते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप अपने स्थानांतरण को किस रूप में स्वीकारते हैं। जब आप अपनी नई स्थिति को आध्यात्मिक अनुशासन में प्रगति का माध्यम समझते हैं, तो यह अपने आप में एक तात्कालिक परिणाम लाता है।

निक्क्यो निवानो, काइसो ज़ुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 40 - 41

Living the Lotus
Vol. 162 (March 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly
by Rissho Kosei-kai International,
Fumon Media Center, 2-7-1 Wada,
Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

“लिविंग द लोटस्: बुद्धिज्म इन एवरीडे लाइफ” का उद्देश्य यह दर्शाना है कि जैसे सरोवर के कीचड़ से निकलकर कमल खिलता है वैसे ही पुण्डरीक सूत्र की शिक्षा का दैनिक जीवन में अनुशरण के प्रयास से हमारा जीवन समृद्ध बनता है, हमारा जीना सार्थक होता है। इसका संस्करण के माध्यम से दुनियाँ में लोगों के दैनिक जीवन में बौद्धधर्म की शिक्षा को सरल बोधगम्य बनाना है।

प्रेसिडेण्ट का संदेश

खुशी पैदा करना अपने और दूसरों के लिए

श्रद्धेय निचिको निवानो

प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ

क्योंकि हम बुद्ध के बच्चे हैं

हम सभी, चाहे हम कोई भी हों, स्वयं को और अपने परिवार को खुश रखना चाहते हैं। उसी समय, हमारे निहित बुद्ध - स्वभाव का मतलब है कि हमारे पास ऐसा मन है जो अन्य लोगों को पसंद करते हैं - यहाँ तक कि अनजाने को भी खुश देखना चाहते हैं।

अमितार्थ सूत्र के अध्याय 3 ("दस पुण्यबल") से उद्धृत करने के लिए, "आप सभी कुलपुत्र और कुलपुत्रियाँ, जो वास्तव में बुद्ध के बच्चे हैं, और महान परोपकार और महान करुणा के साथ, दुखों को दूर करते हैं और विपत्तियों को रोकते हैं।" दूसरे शब्दों में, बुद्ध के बच्चों के रूप में, हम लोगों के कष्टों को दूर कराते, उन्हें विपदाओं से मुक्त कराते और जब हम करुणा पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो उनकी भावनाएँ सहज भाव में आ जाती हैं।

भले ही हमें एहसास हो या ना हो कि हम बुद्ध के बच्चे हैं, ऐसा लगता है कि यह महत्वपूर्ण है, लेकिन वास्तव में, हम में से बहुत कम लोग हैं जिन्होंने इस अहसास को ध्यान में रखते हुए दूसरों के साथ बातचीत की है।

हालाँकि, मुझे लगता है, कोई व्यक्ति जो समझता है कि हमारा जीवन, उदाहरण के लिए, अनित्य है और अनात्म है, बुद्ध का एक बच्चा है। चाहे आपने धर्म के तीन मुहरों के बारे में सीखा है (सभी चीजें अनित्य, सभी चीजें अनात्म हैं, तथा निर्वाण शांत है), चाहे किसी ने आपको उनके बारे में बताया, या नहीं, तथ्य यह है कि आपके भीतर की गहराई में सत्य का एक तार झंकृत है और आप अपने से कहते हो, "यह वास्तव में सत्य है," क्योंकि हम बुद्ध के बच्चे हैं।

वैपुल्य सूत्र से एक उद्धरण प्रस्तुत करें जो इस प्रकार है, "बोधि की प्राप्ति, यानी प्रथम आकांक्षा का समय।" सूत्र का यह वाक्य हमें बताता है कि जैसे ही कोई व्यक्ति बुद्ध की सम्बोधि के प्रवेश द्वार में प्रवेश करता है, उस व्यक्ति ने बुद्ध की धर्मदेशना का कुछ अंश पूर्व ही प्राप्त कर लिया है। इसलिए, अगर वह व्यक्ति थोड़ा सा अवगत है "सभी चीजें कभी भी बदलना बंद नहीं करती हैं" या "चूँकि सब कुछ बुद्ध - प्रकृति का प्रकटीकरण है, तो ऐसी जागरूकता प्राप्त होती है कि इस विश्व में सब कुछ बहुत सामंजस्य की स्थिति में है," यह कुछ और नहीं है, यह अहसास कि हम बुद्ध के बच्चे हैं। ऐसे व्यक्तियों को बोधिसत्व कहा जा सकता है, क्योंकि वे अपनी और दूसरों की लिए खुशी चाहते हैं और वे अपने आसपास के वातावरण में खुशी लाते हैं।

एक जीवित सूत्र है

हम कहते हैं कि जो कोई भी हमारे संगठन रिश्शो कोसेइ काइ में प्रवेश करता है, वह धर्मदेशना का प्रचारक प्रसारक बन जाता है। सामान्य तौर पर, यह सोचना उचित ही है कि बुद्ध की धर्मदेशना की शिक्षा में कैसे सक्षम हो जाता है जो कि जो दूसरों को धर्म का उपदेश करने जैसा है। हालाँकि, "दस पुण्यबल" में एक मार्ग स्पष्ट रूप से हमें बताता है कि जो लोग बुद्ध के उपदेश को सुनते हैं, वे दूसरों को कष्ट से मुक्ति दिला सकते हैं, भले ही वे अभी भी भ्रम से स्वयं को मुक्त करने में समर्थ नहीं हुए हैं।

उदाहरण के लिए, मित्र के प्रति भयंकर क्रोध रखने वाला मनुष्य बुद्ध के उपदेश को सुनता है और उस पर चिंतन करता है, यह सोचकर, "मेरा क्रोध आत्मकेन्द्रित मन के कारण था जो चाहता था कि मेरा मित्र मेरी इच्छा के अनुसार कार्य करे।" इस आत्म - प्रतिबिंबित विचार का उपयोग अपने दोस्त के साथ एक सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाने के लिए करता है। वह अपने आसपास के अन्य लोगों के लिए एक उदाहरण स्वरूप भी बन जाता है, जो सोचते हैं कि "काश मैं इस तरह से चीजों को देखकर और उन्हें स्वीकार करने में महारत हासिल कर पाता। मैं राहत महसूस करना चाहता हूँ और खुश रहना चाहता हूँ।" वह आदमी, जो अभी भी काफी अनुभवहीन है, एक उदाहरण के रूप में काम कर सकता है क्योंकि बुद्ध की शिक्षाएँ जो उनका मार्गदर्शन करती हैं, सत्य के अनुरूप हैं।

हर किसी को दूसरों के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से जुड़ने की इच्छा होती है। इसलिए, बुद्ध की धर्मदेशनाओं के माध्यम से ऐसा अनुभव करते हैं और सच्चे मन से बोलते हैं उनके बारे में आपने जो महसूस किया है, उसे ईमानदारी से बोलें और बतायें कि उन्होंने आपको किस तरह से प्रेरित किया है। इससे दूसरों में उम्मीद जगती है कि वे आपके जैसे व्यक्ति बन सकते हैं, हर दिन एक ऐसे दिमाग के साथ रह सकते हैं जो उज्ज्वल, सच्चा और दयालु हो। वे आपकी तरह बनना चाहते हैं - दूसरों के करीब आने के लिए जिनके पास चिंताएँ और परेशानियाँ हैं और उनके साथ खुश रहने का प्रयत्न करते हैं।

यह "दस पुण्यबल" में भी लिखा गया है कि "यह सूत्र जहाँ कहीं भी बोधिसत्व का अभ्यास कर रहा है, उसका पालन करता है।" मुझे उम्मीद है कि उज्ज्वल और प्रसन्नता से जीनेवाले निराशा में डूबे लोगों के मन में सत्य का प्रकाश जलाते हैं, और हम उन्हें "आशीर्वाद के अच्छे क्षेत्र" के रूप में सेवा द्वारा एक शांतिमय नए जीवन की ओर निर्देशित करते हैं। दूसरे शब्दों में, मुझे आशा है कि हम सभी हर्षोल्लास पैदा करने वाले लोग बनेंगे।

ऐसा करने के लिए, हर समय और सभी लोगों के साथ, हमें "हसमुख, विनम्र और गर्मजोशी से" के दृष्टिकोण को कभी नहीं भूलना चाहिए। आप शास्त्र की व्याख्या करने में कुशल नहीं हो सकते हैं, लेकिन जब तक आप दूसरों के संबंध अपनी विचारशीलता में दृढ़ रहते हैं, आप एक "जीवित सूत्र" बन सकते हैं जो अन्य लोगों के लिए खुशी लाता है।

From *Kosei*, March 2019

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
अध्याय 5: औषधीय जड़ी बूटियों का दृष्टान्त

श्रद्धाविश्वास एवं विवेक विषय के पूर्ववर्ती अध्याय का मूलसार सम्बन्धी महाकश्यप के दृष्टान्त की बुद्ध द्वारा प्रशंसा के साथ इस अध्याय का प्रारंभ होता है - एक दृष्टान्त जो तथागत के गुणों को ठीक ठीक दर्शाता है, वे बुद्ध की उच्चतम उपाधि तथागत से अभिहित हैं। बुद्ध पुन: तीन प्रकार की जड़ीबुटियों तथा दो प्रकार के वृक्षों के दृष्टान्त के साथ आगे बढ़ते हैं, जो शिक्षा तथा शिक्षा पानेवाले जीवित प्राणिओं के बीच के सम्बन्ध की विवेचना करता है। उस विवेचना का सारांश इस प्रकार है।

औषधीय जड़ी बूटियों के तीन और वृक्ष के दो प्रकार का दृष्टान्त

बुद्ध ने महाकश्यप की उक्ति की पुष्टि की कि तथागत के अनन्त गुण हैं, सत्य का पूर्ण ज्ञान है और उसकी प्रस्तुति में पूर्ण स्वतंत्र हैं, जिससे कि सभी प्राणियों को समान सेवा मिल सके और उन्हें बुद्ध का ज्ञान, प्राप्त हो सके। इसकी व्याख्या के रूप में बुद्ध ने वर्णन किया कि कैसे पृथ्वी पर उगनेवाले पौधे हर आकार प्रकार और प्रवृति के होते हैं, लेकिन सभी वर्षा से मिलनेवाली नमी के प्यासे है।

एक महा बादल आकाश को ढक लेता है और बारिश गिरता है।पृथ्वी पर हर जगह बारिश होती है, और सभी पौधों को समान रूप से और बहुतायत से जल मिलता है। छोटे पौधे, मध्यम आकार के पौधे, बड़े पौधे, नये पेड़ और बड़े पेड़ सभी जीवनदायी नमी में सिक्त हो जाते हैं, जो उनकी उर्जा को पुनर्स्थापित करता है और उनकी वृद्धि का कारण बनता है।

और हलाँकि वर्षा सब पर समान रूप से होती है, लेकिन प्रत्येक अपनी प्रकृति के अनुसार बढ़ते, आकार लेते, फूलते और फल देते हैं।

बस, बुद्ध ने महाकश्यप से कहा, वैसे ही तथागत हैं। आकाश को ढकने वाला बादल है।उनकी शिक्षा पृथ्वी पर हर जगह गिरने वाली वर्षा है, और जीवित प्राणी असीम रूप से विविध पौधे और पेड़ हैं।

तथागत का उपदेश ब्रह्मांड का सत्य है; सभी चीजों की परम वास्तविकता है। नमी देनेवाली वर्षा की तरह, इसका एक ही स्वरूप और विशेषता है।लेकिन लोग बाहरी सज्जा, प्रकृति, जन्म और परवरिश, स्वास्थ्य, परिवेश और व्यवसाय में भिन्न होते हैं।इन मतभेदों के बावजूद भी सभी लोग अपने मूल बुद्ध - स्वभाव में एक जैसे हैं, प्रभावित करते हैं कि वे सत्य की वर्षा के लिए कितने ग्रहणशील हैं।हालाँकि, उनकी ग्रहणशीलता में बड़ा अंतर है, सभी सत्य की वर्षा प्राप्त करते हैं, लेकिन अपनी ग्रीह्यक्षमता के अनुसार, अपनी प्रकृति के अनुसार - पेड़ पौधों की तरह प्रकृति के अनुसार - एक पौधा जिसे यह पता नहीं है कि यह बड़ा, मध्यम या छोटा आकार का है,महज अपनी प्रकृति के अनुसार आकार लेते, फूलते और फल लगते हैं।

बुद्ध की नजर में प्रत्येक व्यक्ति एक पौधे की तरह है।वर्तमान में आध्यात्मिक स्तर क्या है? ब्रह्मांड में किसी का मान क्या है? सिर्फ बुद्ध ही जान सकते हैं। बुद्ध उन परिस्थितियों को सही रूप से बताते हैं जिनमें हर व्यक्ति रहता है, साथ ही साथ आध्यात्मिक विकास का उनका स्तर भी।और बुद्ध आगे जानते हैं कि सभी लोग अपने अस्तित्व के मूल में बिल्कुल समान हैं।

इस ज्ञान के आधार पर, बुद्ध ने धर्मदेशना को प्रत्येक व्यक्ति के लिए सुग्राह्य आकार में प्रस्तुत किया है। इस प्रकार सभी को जीवन के कष्टों से मुक्ति पाने और आध्यात्मिक प्रगति के सम्यक मार्ग पर आरुढ़ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। व्यक्ति के अनुसार मुक्ति विभिन्न रूप लेती प्रतीत होती है, लेकिन मुक्ति के लिए केवल एक ही मूल देशना है, और इसकी सभी पर समान रूप से वर्षा होती है।लेकिन, प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव, चरित्र और परिस्थितियों के साथ देशना और मुक्ति का रूप भिन्न होता है, ताकि हर व्यक्ति इसे स्वीकार करने में सक्षम हो सके।यह बुद्ध धर्म का सर्वोच्च गुण है।

आवश्यक समानता और उपस्थिति में अंतर

दृष्टांत का पाठ बौद्ध मुक्ति की विविधता और पहचान है, लेकिन हमें इस पाठ को भी स्पष्ट देखना है कि सच्चा ज्ञान मानव जाति

की मौलिक एकता है जो भिन्न रूपों में प्रकट होता है।

मानव जाति की आवश्यक समानता के बारे में जागरूकता की ओर झुकाव अतिप्राचीन काल के उन चीनी “अविनाशियों” की तरह हैं - जो दुनियाँ से अतिदूर हवा में अवस्थित हैं, एक मनोवृति जो असल जीवन से मेल नहीं खाता है। लेकिन पूरी तरह से भिन्न प्रकार के मनुष्यों में उलझकर रह जाना गलत है, क्योंकि श्रेष्ठता और हीनता की भावनायें, गर्व, घमण्ड, अहंकार, घृणा, ईर्ष्या, संघर्ष और इच्छा को जन्म देती हैं, जिससे कलह विवाद और दर्द पैदा होता है।

हमारे सतही जीवन में जो भी भिन्नतायें हो, सभी लोगों के लिए वास्तविक सत्यता बुद्ध के साथ हमारी एकता है। जिस किसी के पास इस सच्चाई के बारे में दृढ़ता और जागरूकता है, वह सही तरीके से जीने में सक्षम है, जिससे उसका जीवन और दूसरों का जीवन सही मायने में सार्थक होगा।इस तरह है, हम आज इस अध्याय के पाठ को अपने जीवन में अभ्यास में ला सकते हैं।

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
अध्याय 6: बुद्धत्व की प्राप्ति की भविष्यवाणी

सूत्र के अध्याय 4 में महा - कश्यप द्वारा वर्णित दृष्टांत को सुनने के उपरान्त, शाक्यमुनि आकर्षित हुए कि चार शिष्यों - महाकश्यप, महामौद्गल्यायन, सुभूति और महाकात्यायन - को धर्म में श्रद्धाविश्वास और उसकी समझ हो गयी है और यहाँ इस सूत्र में उन्होंने उनके बुद्धत्त्व प्राप्ति की भविष्यवाणी की।

जैसा कि पहले अध्याय 2 में बताया गया है, यहाँ “आश्वासन” से आशय है, बुद्ध द्वारा किसी के बुद्धत्व प्राप्ति की भविष्यवाणी करना है और इस प्रकार किसी समय भविष्य में वह बुद्ध बन जायेगा।

आश्वासन सापेक्ष है

लेकिन यह आश्वासन सापेक्ष है। जैसा कि इस अध्याय में कहा गया है, बुद्धत्व की।

प्राप्ति हाथ के निकट लग सकती है, लेकिन वास्तव में इसे लंबे अभ्यास के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है।अगर हम समकालीन अर्थों में इसके बारे में सोचते हैं, तो यह कुछ हद तक एक विशिष्ट स्कूल या विश्वविद्यालय में भर्ती होने जैसा है।प्रवेश आवश्यक और महत्वपूर्ण है, लेकिन प्रवेश पत्र एक डिप्लोमा नहीं है। अध्ययन सीखने में परम आवश्यक है।हमें यहाँ यह याद रखना चाहिए कि मुक्ति की प्राप्ति का सम्यक मार्ग अपनी इच्छा और अपने प्रयास से बुद्ध के शरण में जाना है, जैसा कि अध्याय 3 में जलते हुए घर के दृष्टांत में सुझाया गया है।

होक्के सानबू क्यो: काकू होन नो आरामाशी तो योतेन,
(कोसेइप्रकाशन 1991, [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 68-74)

Director's Column

हम अपने और अन्य के लिए सच्ची खुशी लायें

मार्च आ गया है - एक ऐसा समय जब हम रिश्शो कोसेइ काइ की स्थापना का वर्षगाँठ मनाते हैं। इस वर्ष, हम संगठन के इक्यासीवाँ वर्ष को चिन्हित करते हैं, जो हमारे शताब्दी वर्ष की ओर एक और कदम है।

इस वर्ष के आरंभ में, प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने हमें वर्ष का विचार विषय दिया है: "हम स्वयं को विकसित करें।" जनवरी में नव वर्ष के धर्म मार्गदर्शन में, प्रेसिडेण्ट निवानो ने कहा कि जेन मास्टर डोगेन (1200-1253) ने "स्वयं" को एक बड़ी इकाई के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें स्वयं और ब्रह्मांड के सभी प्राणी शामिल हैं। इस चर्चा के अनुरूप, प्रेसिडेण्ट निवानो ने अपनी मान्यता की पुष्टि की कि स्वयं और अन्य एक हैं, अलग नहीं हैं, और सभी चीजें सम्बद्ध हैं।

मार्च के लिए अपने मासिक संदेश में, प्रेसिडेण्ट निवानो ने अमितार्थ सूत्र के अध्याय 3 "दस गुण" से एक उद्धारण दिया है, जो हम सभी को जागरूक करने के लिए कहता है कि हम बुद्ध के बच्चे हैं, हमेशा दूसरों के बारे में विचार करने के लिए, और अपने और दूसरों के लिए खुशी और मुक्ति लाने के लिए।

1938 में जब संस्थापक निक्क्यो निवानो ने रिश्शो कोसेइ - काइ की स्थापना की, तो उनकी स्थापना का उद्देश्य था कि जितने लोगों को संभव हो, वे पुण्डरीक सूत्र में उल्लिखित जीवन के तरीके को जानें और सच्ची खुशी को अपना बना लें। इस महीने, आइए, हम अपने संस्थापक के उद्देश्य को अपना बनाकर धर्म के प्रचार प्रसार में सश्रम प्रयास करें।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movememt

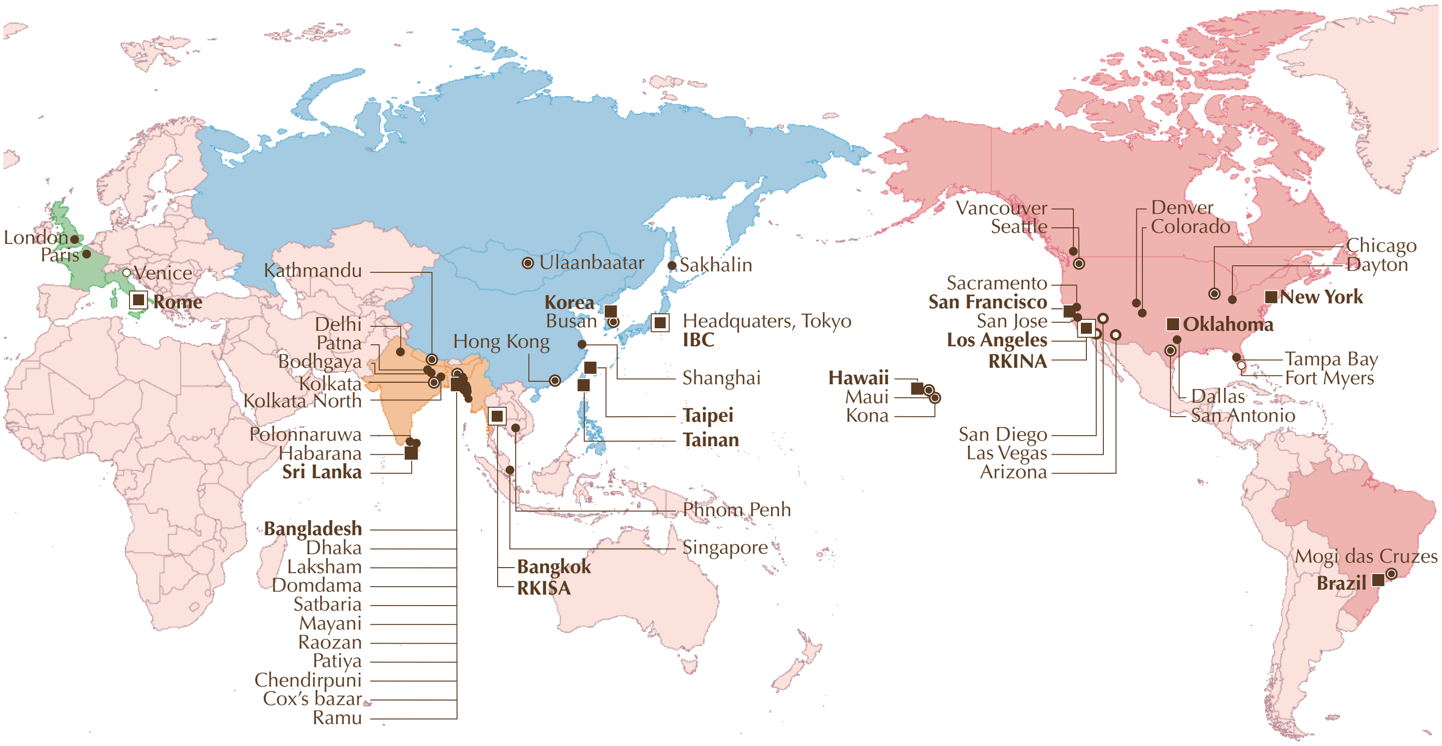

Rissho Kosei-kai International
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street, Suite #1, Los Angeles, CA 90033, U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, U.S.A
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 *e-mail:* rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://rkchi.org/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel: 1-405-943-5030 *Fax:* 1-405-943-5303
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377 *Fax:* 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420,
Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

International Buddhist Congregation (IBC)
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur, Kathmandu,
Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna
Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel & Fax: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station:
Mirshari, District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Branches under the Headquarters
Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax: 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Venezia
Rissho Kosei-kai of Paris